फोटो– अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

खुद करके देखना और तब सीखना

– हरपाल सिंह/मुकुल सक्सेना

बच्चों के स्कूली जीवन में कदम रखने पर, शिक्षा व शिक्षकों से अपेक्षा यह है कि वे इस जिज्ञासा व उनके प्रश्नों और अनुभवों को कक्षा में स्थान दें ताकि बच्चों का सीखना सही दिशा में हो पाए।

बच्चे के भीतर खोजने की क्षमता तीव्र होती है। बहुत सारे सवाल मन में होते हैं जिनका उत्तर जान लेने को मन आतुर रहता है। कुछ बातों को वे बड़ों से पूछकर प्राथमिक तौर पर जान लेते हैं लेकिन उस पर उनकी पुख्ता समझ तब बनती है जब उस वस्तु या स्थिति के साथ खुद को जोड़कर अनुभव प्राप्त करते हैं।

जरा अपने बचपन में जाएं और याद करें हमने बचपन में किसी वस्तु के बारे में कैसे जाना। उदाहरण के लिए हमने कब जाना कि यह पेड़ है, इसके पत्ते ऐसे होते हैं, इसके फल खाए जाते हैं और फलां पेड़ के फल नहीं खाए जाते हैं। हमने कब और कैसे समझा कि इस पेड़ का नाम क्या है और अलग–अलग पेड़ों को क्या कहते हैं। ठीक इसी तरह से यह हमें कैसे पता चला कि आसमान में उड़ने वाले पक्षियों और जमीन पर चलने वाले जन्तुओं में क्या अन्तर है? यह हमें कैसे पता चला कि हमारा घर किस गांव/मोहल्ले में है और उस गांव/मोहल्ले का नाम क्या है, कुछ याद आया? इन प्रश्नों के जवाब में हम एक वाक्य में कह सकते हैं कि हमने देखा और हमें बड़ों ने बताया कि इस चीज को यह कहते हैं। किन्तु जरा दिमाग पर जोर लगाएं और गहन विश्लेषण करें तो इसका ठीक–ठीक उत्तर बता पाना किसी के लिए भी इतना आसान नहीं होगा। वह सूत्र क्या था और कब हम पहली बार किसी चीज के बारे में जान पाए और उस जानकारी में कब नई जानकारियां जुड़ती गईं? वास्तव में यह स्वतः होता जाता है। यकीनन इस जानने–समझने में हमारे देखने, सोचने और बड़ों के साथ संवाद का अहम स्थान होता है। एक बात जो हम इस उत्तर को खोजने में शायद नहीं कह पाते वह यह कि उस वक्त हमारे यानि बच्चे के भीतर खोजने की क्षमता तीव्र होती है। बहुत सारे सवाल मन में होते हैं जिनका उत्तर जान लेने को मन आतुर रहता है। कुछ बातों को वे बड़ों से पूछकर प्राथमिक तौर पर जान लेते हैं लेकिन उस पर उनकी पुख्ता समझ तब बनती है जब उस वस्तु या स्थिति के साथ खुद को जोड़कर अनुभव प्राप्त करते हैं। यह कभी न खत्म होने वाली प्रक्रिया है। यही 'जिज्ञासा' सीखने में अहम भूमिका अदा करती है।

बच्चों के स्कूली जीवन में कदम रखने पर शिक्षकों से अपेक्षा यह है कि वे इस जिज्ञासा व उनके प्रश्नों और अनुभवों को कक्षा में स्थान दें ताकि बच्चों का सीखना सही दिशा में हो पाए। विषय अध्यापन और कक्षागत प्रक्रिया के माध्यम से शिक्षक इन बातों का समावेशन करने का प्रयास भी करते हैं। किन्तु कुछ महत्वपूर्ण हिस्से इस पूरी प्रक्रिया से छूट जाते हैं। प्रायः हमारा फोकस बच्चों के सीखने की अपेक्षा अवधारणा, विषयवस्तु को जान लेने या फिर सूचना प्रदान करने तक सीमित हो जाता है। समझ कहीं पीछे रह जाती है और बच्चों को

याद करवाना प्राथमिकता में आगे आ जाता है। जाने–अनजाने में अधिकांश शिक्षक स्वयं को जानकारी प्रदान करने वाले के रूप में देखने लगते हैं और यह मानने लगते हैं कि पाठ्यपुस्तक ही बच्चों में ज्ञान विकसित करने का एक मात्र स्रोत है।

कुछ शिक्षक साथी इसके विपरीत सोचते हैं और बच्चों को कल्पना करने, अनुमान लगाने, तर्क करने, चीजों को स्वयं से खोजने, प्रश्न पूछने और स्वयं से अनुभव करने के भरपूर मौके देने का प्रयास करते हैं। वे अपनी शाला के परिवेश और गांव को सीखने के एक स्रोत के रूप में मानते हैं और बच्चों को उनके परिवेश से जुड़ने, उनकी जानकारियों को व्यवस्थित करने तथा उसके आधार पर नई बातों को समझने के अवसर देते हैं। यहां सीखना सिर्फ कक्षा में सिर्फ बच्चों और शिक्षकों तक सीमित नहीं रहता अपितु बच्चों का पूरा परिवेश और उनके आसपास घटित घटनाएं भी उसकी सहभागी बनती हैं।

बाल शोध मेले की सोच और परिकल्पना इन्हीं मान्यताओं की नींव पर उभरती है। यहां शोध शब्द को चिन्हांकित किया जाना बेहद महत्वपूर्ण है।

शोध शब्द को लेकर एक भ्रम अक्सर सामने आता है कि शोध किसी खास पद्धति, तय मानक संरचना, कठिन शब्दों, और निश्चित प्रारूप में ही किया जा सकता है। इसके लिए विशेष तैयारी, क्षमता और अनुभव की आवश्यकता होती है। जबकि यदि हम ऊपर चर्चा की गई बातों को देखें, जहां हमने सीखने की प्रक्रिया पर थोड़ा बहुत ध्यानाकर्षित करने का प्रयास किया है तो हम पायेंगे कि हमारी खोज की प्रक्रिया भी कहीं न कहीं शोध के रूप में ही रही है। हां, यह हो सकता है कि उस प्रक्रिया में चीजों को किसी क्रम या संरचना में न समझा या महसूस किया गया हो। इससे असहमति नहीं कि एक स्तर पर जाकर किसी खास फ्रेम में चीजों का विश्लेषण करने के लिए कुछ तय प्रारूप और संरचना की जरूरत होती है। किन्तु प्राथमिक स्तर पर हर शिक्षक और हर बच्चा शोध कर सकता है, और यदि देखें तो करते भी हैं। यह बाल शोध मेला शोध जैसे विषय को सरलता और सहजता से करने के मौके उपलब्ध कराता है। यह पूरी प्रक्रिया रोचक और आनन्ददायी होती है। इसके साथ ही बच्चों में विभिन्न कौशलों, दक्षताओं के विकास हेतु भी यह उपयोगी और सार्थक है।

(लेखक, राजकीय प्राथमिक विद्यालय गिद्धपुरी, में अध्यापक हैं)

इम्तिहान से छुट्टी पाई

बौड़मजी ने इम्तिहान में,
खूब अक्ल का जोर लगाया।
अगली-बगली रहे झाँकते,
फिर भी एक सवाल न आया॥

गिनते रहे हॉल की कड़ियाँ,
यों ही घंटे तीन बिताए।
कोरी कापी वहीं छोड़कर,
हँसी-खुशी वापस घर आए॥

आकर खूब कबड्डी खेले,
फिर यारों में गप्प लड़ाई।
मौज-मजे से दिन गुजारकर,
इम्तिहान से छुट्टी पाई॥

- कन्हैया लाल मत्त

(साभार– कविता कोश)